॥ अथ उच्छिष्ट गणपति प्रयोगः ॥

उच्छिष्ट गणपति का प्रयोग अत्यंत सरल है तथा इसकी साधना में अशुचि-शुचि आदि बंधन नहीं हैं तथा मंत्र शीघ्रफल प्रद है । यह अक्षय भण्डार का देवता है । प्राचीन समय में यति जाति के साधक उच्छिष्ट गणपति या उच्छिष्ट चाण्डालिनी (मातङ्गी) की साधना व सिद्धि द्वारा थोड़े से भोजन प्रसाद से नगर व ग्राम का भण्डारा कर देते थे ।

इसकी साधना करते समय मुँह उच्छिष्ट होना चाहिये । मुँह में गुड़, पताशा, सुपारी, लौंग, इलायची ताम्बूल आदि कोई एक पदार्थ होना चाहिये । पृथक-पृथक कामना हेतु पृथक-पृथक पदार्थ है ।

यथा

लौंग, इलायची वशीकरण हेतु ।

सुपारी फल प्राप्ति व वशीकरण हेतु ।

गुडौदक – अन्नधनवृद्धि हेतु तथा

सर्व सिद्धि हेतु ताम्बूल का प्रयोग करें ।

अगर साधक पर तामसी कृत्या प्रयोग किया हुआ है, तो उच्छिष्ट गणपति शत्रु की गन्दी क्रियाओं को नष्ट कर साधक की रक्षा करते हैं।

इस मन्त्र का कंकोल ऋषि, विराट छन्द, उच्छिष्ठ गणपति देवता है । मन्त्र के दो, तीन, दो, दो अक्षरों तथा पूरे मन्त्र से पंचान्ग्न्यास कर उच्छिष्ट गणपति का ध्यान करना चाहिए ।

मंत्र : हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा

विनियोग : अस्योच्छिष्टगणपति मन्त्रस्य कंकोल ऋषि: विराटू छन्द उच्छिष्ट गणपतिर्देवता सर्वाभीष्टसिद्धये जपे विनियोग: ।

पञ्चाङ्न्यास :

ॐ हस्ति हृदयाय नमः

ॐ पिशाचि शिरसे स्वाहा

ॐ लिखे शिखाये वषट्

ॐ स्वाहा कवचाय हुम्

ॐ हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा अस्त्राय फट्

इस मन्त्र का ध्यान :

चतुर्भुजं रक्ततनुं त्रिनेत्रं पशाङ्कुशौ मोदक पात्र दन्तौ ।

करैर्दधानं सरसीरुहस्थम् उन्मत्तम् उच्छिष्ट गणेषमीडे ॥

अर्थात--

चार भुजा वाले, रक्तवर्ण, तीन नेत्र वाले, कमलदल पर विराजमान दाहिने हाथों में अंकुश एवं मोदक पात्र तथा बाँये हाथों में पाश एवं दन्त धारण किये हुये उन्मत्त भगवान् उच्छिष्ट गणपति का ध्यान करता हूँ ।

पुरश्चरणविधि :

इस मन्त्र का १ लाख जप तथा तिलों से दशांश हवन करना चाहिए। पूर्वोक्त रीति से पीठ पर उच्छिष्ट गणपति का पूजन करना चाहिए। सर्वप्रथम अंगों का पूजन कर दिशाओं में ब्राह्मी आदि मातृकाओं का पूजन करना चाहिए । ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा एवं लक्ष्मी--ये ८ मातृकाएं हैं ।

१० दिशाओं में वक्रतुण्ड, एकदंष्ट्र, लम्बोदर, विकट, धूम्रवर्ण, विघ्न, गजानन, विनायक, गणपति एवं हस्तिदन्त का पूजन करना चाहिए। फिर दोनों आवृतियों में इन्द्र आदि दिक्पाल तथा वज्र आदि आयुधों का पूजन करना चाहिए। इस प्रकार (पुरश्चरण द्वारा) मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक काम्य प्रयोगों को कर सकता है ।

प्रयोगविधि :

पूर्वोक्त रीति से ध्यान करने के बाद पीठ एवं पीठस्थ देवताओं का पूजन कर मूल मन्त्र से देवता की मूर्ति कल्पना कर पुनः ध्यान आवाहन आदि पञ्च पुष्पांजलि समर्पण पर्यन्त समस्त कार्य कर अंगपूजन करना चाहिए ।

फिर पूर्व आदि दिशाओं में --इन मन्त्रों से मातृकाओं का पूजन करना चाहिए ।

ॐ ब्राहये नमः,

ॐ माहेश्वर्यै नमः,

ॐ कौमार्ये नमः,

ॐ वैष्णव्यै नमः,

ॐ वाराह्ये नमः,

ॐ इन्द्राण्यै नमः,

ॐ चामुण्डायै नमः,

ॐ महालक्ष्म्यै नमः

तत्पश्चात पूर्व आदि १० दिशाओं में इन मन्त्रों से दलों में पूजन करना चाहिए।

ॐ वक़्तुण्डाय नमः,

ॐ एकदंष्ट्राय नमः,

ॐ लम्बोंदराय नमः,

ॐ विकटाय नमः,

ॐ धूम्रवर्णाय नमः,

ॐ विध्नाय नमः,

ॐ गजाननाय नमः,

ॐ विनायकाय नमः,

ॐ गणपत्तये नमः,

ॐ हस्तिदंताय नम:---

फिर दलों के बाहर पूर्व आदि दिशाओं में इन्द्र आदि दिकपालों का तथा उनके समीप वज्र आदि आयुधों का पूजन करना चाहिए |तदनन्तर धूप दीप आदि से पूजन कर मूलमन्त्र का जप करना चाहिए |

इस प्रकार १ लाख जप करने के बाद तिलों से १० हजार आहुतियाँ देकर हवन, १ हजार तर्पण, १ सौ मार्जन एवं १० ब्राह्मणों को मोदक, खीर आदि से भोजन कराना चाहिए। इस रीति से पुरश्चरण करने पर उक्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र को सिद्ध करने के बाद साधक इससे विविध काम्य प्रयोग कर विविध फल प्राप्त कर सकता हैं ।

काम्यप्रयोग :

- लाल चन्दन या श्वेत अर्क से अपने अंगूठे के बराबर की ध्यान में बतलायी आकृति जैसी सुन्दर गणेश जी की प्रतिमा बनाकर बिधिवत प्राण प्रतिष्ठा कर उसे मधु से स्नान कराना चाहिए ।
- कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी से शुक्लपक्ष की चतुर्दशी तक प्रतिदिन गुड एवं खीर निवेदित कर एकान्त में उच्छिष्टमुख एवं वस्त्र रहित होकर 'मैं स्वयं गणेश हूं'—इस भावना के साथ घी एवं तिल से १ हजार आहुतियाँ देनी चाहिए। इस प्रयोग के प्रभाव से राजकुल में उत्पन्न या कोई भी अन्य व्यक्ति १५ दिन के भीतर राज्य प्राप्त कर लेता है ।
- इसी प्रकार कुम्हार की मिट्टी की प्रतिमा का पूजन करना राज्य दायक होता है ।
- बांबी की मिट्टी से बनी प्रतिमा का पूजन करना मनोवाड्छित लाभ देता है।
- गौड़ी प्रतिमा का उक्त रीति से पूजन करना सौभाग्य दायक तथा लावणी प्रतिमा का पूजन शत्रुओं को क्षुभित करता है।
- नींम की प्रतिमा का उक्त रीति से पूजन करने से शत्रुओं का नाश होता है

- घी, शहद एवं शक्कर को लाजा (खीलों) में मिलाकर हवन करने से समस्त जगत वश में हो जाता है ।
- उच्छिष्ट मुख से शय्या में सोते हुए जप करने से शत्रुओं को वश में किया जाता है ।
- राजी पुष्पों में सरसो का तेल मिलाकर हवन करने से शत्रुओं का विद्वेषण होता है।
- द्यूत, विवाद एवं लड़ाई में इस मन्त्र का जप करने से जीत होती है ।
- इस मन्त्र के जप के प्रभाव से कुबेर निधियों का स्वामी बन गया और विभीषण ने राज्य प्राप्त किया ।
- लाल वस्त्र पहिनकर या लाल अंगराग लगाकर पान खाते हुए जप करना चाहिए।
- अथवा गणेश जी को निवेदित लड्डू खाते हुए जप करना चाहिए।
- मांस, फल या पान आदि किसी चीज से बलि देनी चाहिए ।

बलि का मन्त्र---

१९ अक्षर का बलिमन्त्र बतलाया गया है ।

: **गं हं क्लौं ग्लौं उच्छिष्ट गणेशाय महा यक्षायायं बलि:.**

इसके पश्चात कवच पाठ भी करना चाहिए.

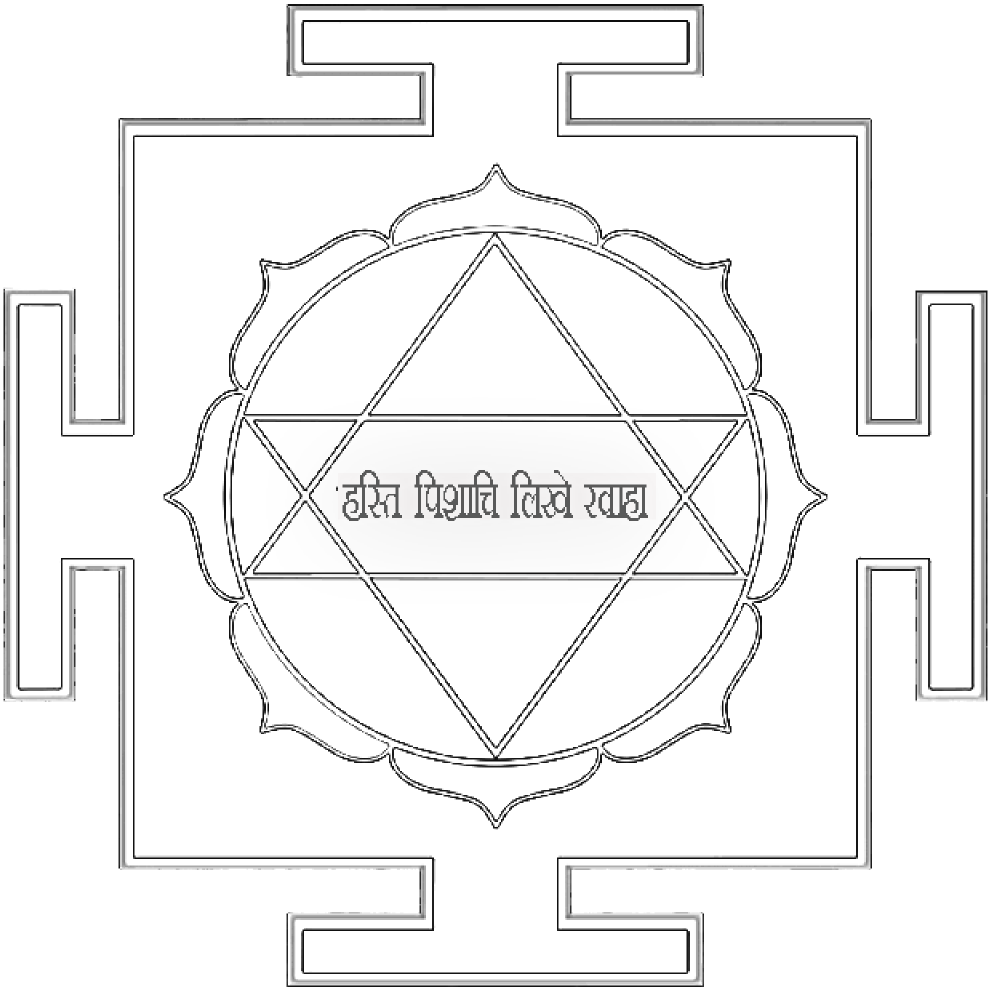
हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा